(151)

1

संभाव्य आमरण अनशन

अण्णा-अरविंदजी... सत्य बताने के लिए माफ करना!!!
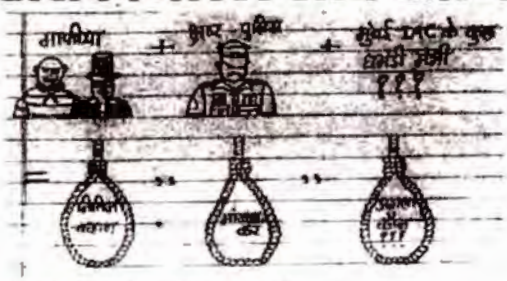
अपनी जान पर खेलकर भी सच्चाई सामने लाऊंगा ताकी जो हुआ वो आईंदा किसी वॉलंटर के साथ ना हो। (ये सब पहले से ही तय था। सिर्फ आंदोलन खत्म होने तक चुप रहने का निच्छय मुंबई IAC मे बताया था।)

१८/८/१२

अण्णाजी, अरविंदजी और सच्चे वॉलंटर साथियो....

मै इंसानी गरीमा को कुचलनेवाले कई भ्रष्टाचार से सफलतापुर्वक लडा पर आखिर मे अपने ही कुछ लोगों के वजह से जो जिल्लत मिली और आगे भी मिलेगी, उससे अच्छा है की मै इन सारी बातों पर अण्णा, अरविंदजी और नीडर वॉलंटर द्वारा विचारमंथन होने हेतु अपनी जान को ही दाव पर लगा दुं। शायद यहाँ जान जाने के बाद ही सच्चाई सामने आती है।

पुरी हकिकत जो है वो मेरी समझ के बाहर है, इस पर अब पडनेवालों को ही समझना है। इस पत्र में भांडुप की हकिकत (पार्श्वभुमी और मुख्य घटना), इस हकिकत के दरम्यान मुंबई IAC के कुछ पेज थ्री मंत्रीयों की संदेहास्पद भुमिका ॲक्युअल बर्ताव, जमिनी तौर के मूल वॉलंटर को खदेडकर चापलुसों को बढावा देना, मॅच फिक्सिंग किये हुऐ खिलाडी के जैसा आंदोलन करना, भ्रष्टाचार से लडनेवाले वॉलंटर का साथ देने के बजाय भ्रष्ट माफीया का साथ देना और ये सच बोलने के पहले ही उस वॉलंटर को बदनाम करना इन सब सच्चाई पर जाँच होने की ये जंग है।

हकिकत :-

दरसल इस हकिकत का पत्र मैने पोलिस कमिश्नर को दिया था। जिसका हिंदी अनुवाद इस तरह :-

मै, नितिन चव्हाण, भांडुप, होम अप्लायंस मेंटनन्स का काम साई सर्विसेस के नाम से करता हूँ।

मै श्री. अण्णा हजारेजी के इंडिया अगेन्स्ट करप्शन मार्फत चलनेवाले राष्ट्रीय आंदोनल में एप्रिल २०११ से सक्रीय हूँ। तथा मुलुंड-भांडुप के हमारे वॉलंटर्स की मिटींग लेना, अण्णा हजारे के आंदोलन के सारे कार्यक्रम जैसे चौकसभा, रॅली, जनमत सभा, चिंतन सभा ऐसे कार्यक्रम सभी साथियों के साथ चलाये। (सबुत - सारे मिटींग के मिनट रेकॉर्ड, पोलिस स्टेशन मे दिये लेटर तथा कुछ फोटोज है)

A) **पार्श्वभूमी :-**

१) हमारे एक पुराने सक्रीय वॉलंटर श्री. बाळकृष्ण मांजलकर, उम्र-४८, इन्होने १५/४/२०११ को मनपा, एस वार्ड ये निवेदन दिया की उनके यहाँ एक पब्लिक वाचनालय राजनैतिक माफियोंद्वारा तोडके वहाँ अवैध निर्माण हुआ है। उस मामले में मांजलकर को धमकी मिलना, उनके बेटे को पुलिस ने परेशान करना, उनके निकटवर्तीओं पर हथियारों से हमले होना ऐसे प्रकार हुऐ। लेकिन हमारे प्रयासोंसे उस मामले मे पुलिस और मनपा का माफिया को सपोर्ट देने की लगातार खबरे दै. लोकमत अखबार में आती रही। जिस वजह से वो निर्माण टुटना, माफिया पर कारवाई होना तथा इंस्पेक्टर हलदे के उपर Enquiry आना ये काम हुऐ। इस बात का पुलिस और माफिया का हम पर गुस्सा था। (सबुत - सारे पत्रव्यवहार और पेपर कटींग है)

२) हमारे (इंडिया अगेन्स्ट करप्शन) के ८ जनवरी १२ के मुलुंड विद्यामंदीर के मिटींग में हमारे और एक साथी श्री. हमीद सरवैया ने बताया की उनके विभाग में झेंडावंदन के पोल के आसपास कुछ भू-माफीया द्वारा सिमेंट की बोरी रखी गई है और वह पवित्र जगह भी हडपने की साजिश है। इस वजह से उस जगह हर साल के जैसा झेंडावंदन हो नही सकता। इस पर मिटींग में एकमत हुआ की इसपर कानुनी तरीके से हल निकाला जाये। तथनुसार हमीदभाई ने सिमेंट बोरी हटाने के लिए मनपा और पुलिस में निवेदन दिया, लेकीन वहाँ से बोरी हटाने के बजाय दुगनी हुई। फिर हमने मनपा में जाकर ये भुमिका ली की - 'बोरी और भी बढने दो, झेंडावंदन उसी जगह पर होगा और ध्वज अपमान की जिम्मेदारी आपकी होगी।' इसके बाद किसी ने वहाँ से बोरी हटा दी और २६ जनवरी १२ को हम सभी वॉलंटर ने वहाँ झेंडावंदन मनाया। वो जमीन हडपने की साजिश नाकाम कर दी। इसी का वे कथीत भू-माफीया राजेश अमिन, संकेत जोशी, कार्ल डिसूझा का हम पर गुस्सा था।

३) इसके बाद नागरिकोंसे ये पता चला की उपर दिये माफीया ये राजनेता, मनपा, पुलिस इनकी भागीदारी में विभाग में ऐसी दहशत रखते है कि 'किसी भी चाल रहिवासी को अपने घर का कोई भी बांधकाम ये वो खुद से या उसे परवडनेवाले कॉन्ट्रॅक्टर से नही करना है बल्की उन्हे ही १ से देढ लाख रु. जादा देकर उनसे ही करवाना है और उनके शफी नाम के दोस्त को भी जमीन मालक मानकर उसे भी ५० हजार से १ लाख रु. तक देना है!' इस अल्टीमेटम के बगैर किसी ने बांधकाम किया तो मनपा उसे गिरा देती थी और जो शख्स इनके खिलाफ शिकायत करेगा

(152)

(गुलामी और चापलुसी के खिलाफ लढना है तो वो यहाँ पे भी न चले!)

तो उसके खिलाफ पुलिस झुठा केस रचाकर उसे अंदर करती थी। इसी दहशत के तौर पर विभाग में 'राजुभाई, संकेतभाई, कार्लभाई' ऐसा लोगों के स्वाभिमान को कुचलनेवाला बॅनर भी थडले से लगाया गया। (फोटो देखिये)

ऐसे हीन प्रकार कानुनी तरीकोंसे रोकने हेतु हमीदभाई और हमारे एक सदस्य श्री. राजा जोसेफ इन्होने उन माफीयों के जबरन अतिक्रमण के बारे में मनपा में निवेदन दिया। इसके बाद हमीद सरवैया के परिवार को इन माफीयों से धमकी मिली जिसकी शिकायत भांडुप पुलिस और डेप्युटी कमिश्नर के यहाँ की गई तथा RTI से सिर्फ भांडुप हद्दी में उन माफीया का १३ रॉबरी जैसे केसेस का ब्यौरा मिला। मनपा मे किए हुअे निवेदन पर भी RTI दर्ज किया गया था तथा ये सारे पत्रव्यवहार मा. उपायुक्त मनपा यहाँ भेजा था। (इस दरम्यान उन माफीया ने मुझे मेरे घर से लेकर जहाँ दिखे वहाँ मिलने की और पीछे हटने के लिए शुरुवाती तौर पर १०००००/- रु. लेने की बाते भी की। जिसकी वजह से मै खुद उनसे दुर भागता था।) इन सभी बातों का उन माफीया का हमपर गुस्सा था। (सबुत सारे पत्रव्यवहार के पेपर है) (दरअसल भांडुप के नं. १ राजकीय और धार्मिक भ्रष्टाचार रहे शिवाजी तलाव के बारे में मै ऑक्टोबर ११ से RTI तथा अपील करते आया तथा रेशनिंग के बारे मे मार्च १२ से RTI किया था। इस वजह से भी मै सरकारी खेमे के वक्र नजर मे पहले ही था!) (सारी चौकसभाओं में भ्रष्टाचार विरोधी कठोर भाषण करने से भी मै वक्रदृष्टी में था!)

B) **प्रमुख घटना :-**

१) १९/४/१२ की वो शाम... (कल तक अन्ना के लोगों से डरनेवाले उन माफीयों मे अचानक ये हिम्मत कैसे आयी ये बाद में समझेगा!) वे तीन माफीया और उनका साथी जमाल सरवैया ये चारों शख्स राजा जोसेफ को उनके घर से मारपीट करते हुअे भांडुप पुलिस थाने लेकर गये।

२) पता चलने पर मै, हमीद भाई और कुछ रहिवासी पुलिस थाने पहुचें। उधर हमने देखा की राजा जोसेफ का चेहरा पुरी तरह से सुजा था और वे चारो शख्स उनके आसपास थे। मैने इन्स्पेक्टर श्री. बनकर से पहले राजा जोसेफ को मेडिकल के लिए भेजने को कहा। जिसपर उन्हो ने मुझे धक्का मारकर बाहर किया। मुझे पहले से ही ये डर था की जैसे २०११ में उन्होने दिपक सोनी नाम के शख्स पर झुठा केस रचाकर अंदर किया था वैसे राजा जोसेफ पर भी न हो। इसलिए मैने लोकमत के पत्रकार श्री. अवधुत खराडे को कॉल किया तब उन्होने डेप्युटी कमिश्नर साहब को तुरंत फोन करने को कहा।

३) इत्तफाक से उसी वक्त डेप्युटी कमिश्नर शिंत्रेजी भांडुप पुलिस थाने में ही दुसरे माले पर मिटींग मे थे। तब मैने उनके मोबाईल पर ठिक ८.२९ pm को SMS किया की - Sir, v r d members of india against corruption & egar 2 meet u at now, v r out of bhandup police stn. तब उनका SMS आया की - come to office tomorrow at 1 pm. तब मैने उन्हे उपर जाकर मिलने की कोशिश की तब उन्होने दुसरे दिन मिलने को कहा। मैने वापस SMS किया - ok sir, but v just met u at bhandup police stn & was immergency. our volunter is being treated very bad at there now. please. तब उन्होने SMS किया- will look into matter. उसके बाद हमे पुलिस ने अंदर बुलाकर आरोपी के बेंच पर बिठा दिया। मैने फिर डि.सी.पी. साब को SMS किया - SIR, ur police are arresting to us slso, pl do justice, we r d dedicated volunters of Annaji. तब फिर उन्होंने SMS किया- respect law. (?)

४) उसके बाद २०/०४/२०१२ को रात १२ a.m. से १ a.m. के दरम्यान हम दोनो पुलिस चौथे माले पर ले गई। उधर इन्स्पेक्टर सांगले उन माफियों के साथ ही थे और हमे गंदी गालियाँ देने लगे। उसके बाद उन्होने एक के बाद एक ऐसे हम दोनों को लाथ-मुक्के से चेहरा, पीठ, पैरोंपर बेदर्दीसे मारपीट की। (मेरा १२/४/१२ को रोड ॲक्सिडेंट हुआ था। जिसमे मेरे बाए हाथ पर इलाज शुरु था। उसका मेडिकल रिपोर्ट भी मैने दिखाया, लेकिन....) मुझे पैंट निकलने की सक्ती की लेकिन मैने बडा विरोध किया। उसके बाद इन्स्पेक्टर सांगले ने एक के बाद एक ऐसे हम दोनों के हाथों पर चक्की के बडे पट्टे से १५-२० मिनिट बेदर्दी से मारा। मेरे बाए पैर के ऊपरी हड्डी पर पट्टे के मोटे हँडल से पैर सुजने तक मारा। (मेडिकल रिपोर्ट है) पट्टे की आवाजे सुनकर नीचे उन माफीयों के साथी हमारे लोगों के सामने हँस रहे थे। हमारे हाथ सिकुड नही सकते इतने सुजके मोटे हुअे थे। दरम्यान सांगले ने हमें धमकी दी की 'आप अण्णा के आदमी हमारी शिकायतें करते है क्या.. कुचल देंगे...' उन्होने हमीदभाई को अण्णा कि टोपी भी उतारने को कहा!

५) उसके बाद हमें लॉक-अप में डाला गया। बाद मे २०/०४/१२ को मा. जज ने हमारा अच्छा रेकॉर्ड देखते हुअे पुलिस की रिमांड अर्जी को ठुकराकर हमें हर एक को रुपये १०,००० की जमानत दे दी। (मैने भी छुटनेतक कुछ भी खाने का अनशन किया था) (अंदर की खबर ये की, ये सब करने के लिए १ लाख की किमत दी गई थी। आज भी मेरा बाया हाथ दुखने के वजह से मेरा काम धीमा है।)

चकाला ऑफीस की समांतर हकिकत :-

अब इस हकिकत के दौरान अपने चकाला ऑफीस के कुछ मंत्रीयों द्वारा कैसे घमंडी, संदेहास्पद, दौगला और झुठा बर्ताव हुआ ये तो मेरी भी समझ के बाहर है...

A) **झुठे केस के पहले :-** मै जो भी कार्यक्रम या पत्रव्यवहार किया, उसकी चर्चा मै हमेशा मयांक गांधीजी, प्रफुल्ल वोराजी, नरेश ठाकुरजी से करता था। (see- पार्श्वभूमी (१)) मांजलकरजी के मामले के जो भी पेपर न्युज है, जो भी मैने IAC नागरीक समिती

(१९४७ को चंद अमिरों ने गोरों की जगह ली! आम आदमी तो सिर्फ आजादी के लिए इस्तेमाल हुआ था ??)

(INS) सदस्य के तौर पर उस मामले में मैने सपोर्टिंग लेटर मनपा मे दिया उसकी मैने प्रफुल्लजी से और सब लोगोंसे चर्चा की था। तथा (see- पार्श्वभूमी (२)) ८ जनवरी १२ के मिटींग का पुरा ब्यौरा मैने हर मिटींग के जैसा ऑफीस में चर्चा किया था। (वैसे भी कांजुर से लेके मुलुंड तक कोई ऑफिस में किसी मसले पर शिकायत का फोन करता था तो उसे मेरा नंबर दिया जाता था।) इसके बाद झेंडावंदन करके कैसे वो सार्वजनिक पवित्र जगह हडपने की दादागिरी को 'अण्णागिरी' द्वारा नाकामियाब बनाया गया वो भी पुरी मिटींग में बताया गया। झेंडावंदन के फोटो भी बडी गर्व से MEETING में देखे गये थे! (फोटो है) इसकेबाद पार्श्वभूमी (३) में दि गई अन्याय की चर्चा मैने प्रफुल्लजीसे की थी। तब हमारी ये भी बात हुई कि - वहाँ के लोगो के घर पर 'ये जगह के किसी भी फर्जी मालक को अपने बांधकाम का हप्ता न दे' ऐसा पत्र IAC नागरीक समिती के तरफ से जनजागृती हेतु भेजा जाये और भेजने के पहले पुलिस में भी इंटीमेशन दिया जाये। (दिसंबर ११ के आंदोलन के बाद खुद मयांकजी ने मान लिया था - आंदोलन बढाने के लिए जमिनी तौर के मुद्दे लेना चाहीए ताकि आम आदमी भी जुड जाये) सो हमने 'वे' माफिया के ३ अतिक्रमण कार्योंके निवेदन मनपा में दिये। अब हुआ क्या? उन निवेदनों को मनपा ने माफीया के हाथ दिया! वे उसे लेकर चकाला ऑफीस प्रफुल्लजी के पास आये! उसके बाद प्रफुल्ल जी ने तुरंत ९/३/१२ को मनपा में IAC का पत्र भिजवाया कि - आपके यहाँ INS के मार्फत पत्र लिखनेवाला हमीद सरवैया ये हमारा वॉलंटर ही नही है! (पत्र देखिए)

अब हम भांडुपवासी अब प्रफुल्लजी से पुछते है –

१. जब वो माफीया आपके पास आये थे तब उसकी जानकारी आपने मुझे या भांडुप के किसी वॉलंटर को क्यों नही दी?

२. आप अण्णा के आदमी हो और उनसे ये भी नही पुंछते की मनपा ने आपके गैरकृत्यों के खिलाफ हुई शिकायतों को आपके हाथों दिया कैसे?

३. आप हमीदभाई को झेंडावंदन होने के बाद से अच्छे से जानते थे, और अगर नहीं तो आप भांडुप के वॉलंटर्स से पुछ सकते थे! या खुद उस निवेदन के शिकायतकर्ता रहे हमीदभाई का मोबाईल नं. था, उन्हे पुँछ सकते थे! लेकिन फिर भी बिना अंजाम जाने माफिया के फेवर में आपने मनपा को कैसे लिखके भेजा कि - हमीद सरवैया हमारा वॉलंटर नही है!

४. आपको क्या मनपा ने ये सब पुँछा था ?

५. वो पत्र आपने 'दिनकर जोशी' के जरिये ही भांडुप, एस वार्ड में कैसे उसी दिन पँहुचाया! (साथियों .. ये दिनकर जी के बारे में मुलुंड के हि वॉलंटर्स के हवाले से हमने चकाला ऑफिस में पहले से कई बार इव्हिडेन्स तथा शिकायते रखी जैसे दिसंबर ११ के आंदोलन में एक लंगडे वॉलंटर को लंगडा बोलके रुलाना, लोकल मिटींग में पैर पसारकर बैठना, चौकसभा में माईक छिनकर बात करना, वॉलंटर्स में झगडे लगाना, सबसे घमंड और बत्तमिजीसे बात करना ये सब.. ये ऐसा इसलिये करते थे क्यों की दरअसल मुलुंड-भांडुप के वॉलंटर्स का ग्रुप तोडकर उन्हे सिर्फ मुलुंड में एक क्लब एनजीओ का नाम IAC का इस्तेमाल करके बढाने का था! जो मेरी वजह से हो नही रहा था! ये सब बाते पेपर कटींग के साथ मैने चकाला ऑफिस में रखी लेकीन उन्हे समजाना तो दुर ही रहा! वो इंसान IAC छोडकर गया था, वो वापस क्या सिर्फ मेरे खिलाफ झुठ बोलने आया है?)

** (एक वॉलंटर ने मुझे ये भी बताया कि ये इंसान अब तक भी 'उन' माफिया में से एक संकेत जोशी के संपर्क में है, अगस्त १२ में भी मिले है और शायद इनका ही 'मध्यस्थी' है! इस बात का सबुत मै कुछ लोगों को दिखाना चाहुँगा!)

६. जब 'वो' पत्र मनपा से लेकर वे माफीया बडी खुशी से विभाग के लोगों को दिखाकर चिढा रहे थे की, 'देखो, हमने IAC को भी मॅनेज कर लिया, उन्होने हमीद भाई को भी नकारा है!' ये लेटर की बात मुझे लोगों से पता चली! बडे दु:ख से ये बात मैने आपको बतायी, तब आपने माफीया और मनपा से इसका कोई जवाब मांगा क्या?

७. मैने आपको ये बात भी बतायी कि - 'भविष्य में इस लेटर की वजह से हमारा मजाक बन सकता है।' तभी मेरे लाख कहने के बावजुद भी आप लोगो ने उस लेटर को रद्द करके दुबारा सुधारीत पत्र मनपा मे भेजने को इन्कार किया! (?)

** (आखिर में उसी लेटर का सहारा लेकर हम पर प्रमुख घटना नुसार झुठा केस हुआ, झुठे माफीयों ने पुलिस को ये यकीन दिलाया कि अब IAC इनके पीछे नही आयेगी! पुलिस के वकील ने उसी लेटर को कोर्ट में अपना आधार दिखाया है!)

आज प्रफुल्लजी इतना होने के बाद भी न जाने कहाँ बैठे है। एक फोन भी उन्होने अभी तक नही किया है! अपने ही वॉलंटर को फंसानेवाले है कहाँ???

B) झुठा केस होने के बाद की हकिकत:-

१) जिस दिन (१९/४/१२)) प्रमुख घटना में (२) के अनुसार हम पुलिस स्टेशन गये तब मैने नरेशजी को सारी घटना बताई। लेकीन जिधर रात के ९ बजे IAC का ऑफिशिअल और इमरजेंसी SMS से प्रेमकांत झा के मर्डर के तुरंत बाद विरार में सारे वॉलंटर को जमा होने को कहा जाता है, उधर अपना एक वॉलंटर जो अभी तक जिंदा है उसे बचाने के लिए ऐसा IAC का इमरजेंसी SMS बनाने के बजाय कुछ वॉलंटर्स को पर्सनली SMS भेजा जाता है, ये गलती क्यो? मैने ७ बजे कॉल किया था और रात ११.३० के बाद हम पर झुठा केस हुआ, अगर इमरजेंसी एस्ए भेजा होता तो शायद बहुत से वॉलंटर पुलिस थाने जमा होते और शायद केस न होता!

(154)

(भगतसिंग जैसे न होते तो अंग्रेज लालाजी के हर कोई सत्याग्रही को लाठीचार्ज में मार देती! उन जैसोंका यहाँ मजाक क्युँ ? ?)

२) दुसरे दिन जो वॉलंटर सच्ची भावना से कोर्ट में आये उनका धन्यवाद! लेकीन उन वॉलंटर्स को वहाँ पर नरेशजी ने कैसे गुमराह किया पता नही। हर जगह भीड से काम नही होता। अस्पताल में डॉक्टर और कोर्ट मे वकील लगता है! वो तो हमीदभाई का हमारे विभाग के DYFI (भगतसिंग प्रणित संघटन) के ऑफीस में आना-जाना रहता है इसलिए DYFI के वकील तिवारीजी हमारे लिए जमानत अर्जी देने खडे हो गये! (उन्होने मजाक में कहा - 'नितीन, तुम IAC के एक वॉलंटर हो और तुम्हारे लिये कोई वकिल नही..) हमारी जमानत पास होने के बाद हमे कोर्ट जेल में रखा गया। तब हमारे लिये रोख जमानत का तथा छुटने तक रुकने का टेंशन लेने के बजाय नरेशजी को न जाने क्या 'वेरिफाय' करना था, वे सारे वॉलंटर्स को लेकर उन्ही माफीया के साथ (जो हमें हँसने के लिए अपने दोस्तों के साथ गाडी से आये थे) उनके विवादीत व हमसे शिकायत किए हुअे अतिक्रमण देखने भांडुप में आ गए और उनके साथ सबको लेकर ऐसे घुमे जैसे क्या वे माफीया कोई पिकनीक पॉईंट दिखा रहे हो! विभाग के लोग इस दृश्य को देखकर हँस रहे थे की - 'देखो, दो वॉलंटर मार खाके जेल से अब तक छुटे नही और इनका सिनिअर वॉलंटर उन्ही मारनेवाले दु:शासनो के साथ यहाँ बडप्पन से घुम रहा है!!' 'लोकमत' के एक पत्रकार भी तभी थे वे भी बाद में मेरा मजाक उडाये की - 'नितीन, तुम्हारे लोगों को नाम खराब करने की आदत है क्या ? ये सब करने के बजाय अगर पुलिस स्टेशन के बाहर दो घंटा खडे रहते तो कुछ बात तो बनती थी!'

३) हम शाम ७ बजे हर एक का १०,००० रुपये भरके छुट गये। दोपहर में उन माफीया के साथ घुमने के बजाय अगर नरेशजी सभी से २००-५०० रुपये जमा कर एक रक्कम जमा करते तो हमें शाम तक रुकना नही पडता था। (झोपडपट्टी में रहनेवालों को अक्कल होती है की ऐसे वक्त में पैसे जमा किया जाता है!)

४) अब गंभीर बात ये की दुसरे दिन २१/४/१२ को चकाला ऑफीस के अंतर्गत काम के लिए IMMRT का दादर में इलेक्शन था, जहाँ हमारे सारे वॉलंटर्स मौजुद थे और उन्हें अपने साथी वॉलंटर के साथ क्या हुआ ये पता भी नही था। ये सारी हकिकत मयांकजी को उसी दिन सबको बतानी चाहिये थी। लेकीन न उन्होने ऐसा किया, ना ही मुझे बोलने दिया! ऐसा क्यों मयांकजी ? ** वे वैशी माफीया आप लोगों को दोबारा (प्रमुख घटना के पहले!) १८/४/१२ के दरम्यान मिलने आये और मुझे IAC से निकालने की बात की वो भी आपने मुझे नही बताया! जब आपके खिलाफ सिर्फ न्युजपेपर कें कुछ आता है तो आप इतने बेचैन हो जाते हो की भरे मिटींग में खुद का १ घंटे का स्पष्टीकरण देते हो, लेकिन आपका पुराना वॉलंटर जिसे माफीया और पुलिस ने हाथ-पैर सुजनेतक मारा उसके बारे में आपको सरेआम फक्र से बताने के बजाय वो जानकारी छुपाते हो! क्यो ? अगर उसी दिन बाकी वॉलंटर को ये सब घटना बताते तो शायद उसी दिन मेरे वॉलंटर साथी मेरे लिए सोचते की, नितीन को जमानत और वकिल खडा करने के लिए पैसों की जरुरत है, जमानत देनेवाले प्रॉपर आदमी की जरुरत है, पुलिस के सामने निषेध करना जरुरी है, इस मामले की जाँच होने हेतु गृहमंत्री या कमिश्नर के सामने बैठने की जरुरत है और सबसे जरुरी ये की इतना शारिरीक, मानसिक, आर्थिक तथा मानहानी होने के बाद कई अपना कोई वॉलंटर खुदखुशी न करे इसलिए उसका मनोबल बनाये रखना ये जरुरी है! मेरे जैसा वॉलंटर जो आपके बारे में न्युजपेपर में आने के बाद आपको 'टेन्शन मत लो' ये बोलने फोन किया करता था उस वॉलंटर को ऐसे नाजूक हालत में फोन भी नही किया! मुझे बुलाकर मामले को जानने की बात तो दुर ही रही!

५) आप बिना ठोस परिणाम के जनमंच कार्यक्रम पर ४०-५० हजार रुपये का फंड खर्चा करते हो। उस वक्त मुझे भी ५०००/- रुपये दे रहे थे। लेकिन जब सच में वॉलंटर मर रहा हो ऐसे वक्त आप पैसे नही निकालते ये शर्म की बात है!

६) इसके बाद २४/४/१२ की चकाला ऑफीस में मिटींग थी तभी भी आपने इस अत्याचार की घटना को किसी को नही बताया ! और मिटींग खत्म होने के बाद आप मुझसे पल्ला झाडकर जा रहे थे! वो तो मैने आपको रोककर आपसे निरर्थक चर्चा की! *और उसी समय तिसरी बार वे माफीया हमारे ऑफीस में बात करने आये! तब आप नरेश जी को वैताग के बता रहे थे कि - 'ये नितीन खामखा बात को पर्सनली बढा रहा है!!!' (?)

७) इसके बाद आप लोग उल्टा मेरे उपर ही 'इमोशनली' दबाव डाल रहे थे की - 'नितीन, माफीया लोग मान रहे है की उन्होने झुठा केस रचाया है, वे केस पिछे लेने की और माफी माँगने तैयार है.. तुम भी पिछे हटो!' (दरअसल ऐसा कुछ केस पीछे नही होता है, बस कोर्ट में वे झुठा बयान देने नही आयेंगे इतना ही! उसके बदले में मुझे उनके लुटमार राज के खिलाफ मनपा में नही जाना है!)

८) इस दरम्यान अण्णा का महाराष्ट्र दौरा चालू था और भ्रष्टाचार विरोधी जनआंदोलन के लोग IAC को उसमें दुर रखते है, ऐसी बाते चालू थी। तब ऐसी सुझाव आया की अण्णा को सातारा में ही हम IAC के कुछ लोग मिलेंगे और मेरा सुझाव तो ये था की अगर अण्णा को हमें मिलने नही दिया गया तो मिलने तक, IAC की बातें सुनने तक तथा सबका मनोमिलन होने तक हम आदरपुर्वक अनशन भी करेंगे! सातारा में मेरे चाचा का घर भी है और मै दो दिन पहले ही अपने IAC के लोगों का रहने का बंदोबस्त करने गया था। (वह टुर भी रद्द हो गया!) तब चौथी बार 'वे' माफीया एक औरत (ललिता जैन) को लेकर चकाला ऑफीस आये! और मगरमच्छ के आँसू रोने लगे की - 'सर, इस औरत का घर आप लोगों की शिकायत के वजह से टुट रहा है! ये कर्जा निकालकर काम कर रही है!' जब नरेशजी ने वहाँ से ही मै सातारा था, तभी मुझे फोन करके ये बात बतायी तब मैने जो सच्चाई है वो बताई। (दरअसल वो औरत सावकारी का धंधा करनेवाली थी! ऐसी खबर है कि इन्कम टॅक्स डिपार्टमेंट को उसके घर में बोरी में छुपाये गये पैसे मिले थे! तथा वो औरत अपनी बाजुवाली एक बुढी औरत के घर की जगह पर ही

(गांधी-अण्णा जैसो ने पहली अपनी गल्ली सुधारी फिर दिल्ली की बातें की! हम कब समझेंगे??)

दादागिरी से अतिक्रमण की थी । तथा .जब हमे पुलिस स्टेशन में मारा जा रहा था तब वो औरत भी उन माफीयों के साथ ही थी!)

*९) सबसे विश्वासघातकी बात ये की - नरेशजी २८/५/१२ को रात ११ बजे जिन माफीयों ने (दु:शासन बनके) अपने वॉलंटर्स पर कहर ढाया उन माफीया के साथ बाईक पर भांडुप में घुमते हुअे हम भांडुपवासियों को दिखे! 'उनसे' मिलने के बाद उन्होने फिर मुझे मिलने को बोला तब मैने गुस्से से उन्हे मिलने को मना किया। अब इसमे कुछ सवाल ऐसे:-

i) नरेशजी को मैने पहले ही समझाया कि, आपको उन पीडितों को मिलना है जिनमे से किसी का टेम्पो उन माफीया ने जलाया है, किसी के बच्चे उठवाने की धमकी दी, किसी का पानी का नल काट दिया (क्योंकी वो जगह खाली नही कर रहा था) और बहुत से पिडित थे, एक बार उन लोगों को हमे मिलना है। (मैने उसके दस्ताऐवज भी नरेशजी को मुलुंड के हॉटेल में दिए थे!) लेकिन उन्हे मिलने के बजाय अपना पाप पचाने हेतू आते हुअे माफीयों को चार-पाच बार ऑफीस में बिठाते हो! उनके सामने ही मुझे फोन करके पुँछते हो और फोन लाईन पर ही 'उन्हे' भी शिकायत करनेवाले उन पिडितों के बारे में पुँछ ते हो कि 'क्या आपने ऐसा किया क्या?' अपनी मुर्खता से आप उन पीडितों का नाम क्यों ओपन करते हो? शी...!

*ii) जब मैने ये कहा की – 'वे' लोग अपने मुँह से हर बार ये बोलते है कि हमने आपके लोगों को झुठे केस में फँसाया है! हमारा यही सब काम है! तब आप लोगों ने इस बात का कभी भी विडिओ रेकॉर्डींग क्यों नही किया? (जब की मै हमेशा ये बात बोलता था!) अगर वैसा होता तो वो मेरे लिए कोर्ट में एक सबुत बनता था।

iii) हम लोग जब जमीनी तौर पर 'अण्णा नोटीस बोर्ड' का हमारे लोगों में १/४/१२ को ओपनिंग शामिल होते है, उसमे आप लोग नही आते! हमारे उपर पुलिस अत्याचार होने के बाद २९/४/१२ को जब हमने उसी जगह निषेध सभा ली, उसमें भी नही आते! (उस समय भी माफीया आपको फोन करके ये बोलते है की - देखो ना नरेशजी, नितीन पुरे सभा में हमको गालियाँ दे रहा है, उसें रोको...) *हमारे झुठे केस में चार्जशिट आने के पहले ही हायकोर्ट में FIR ही झुठा होने का केस करना होता है लेकिन नरेशजी के टाईमपास में समय निकल गया और चार्जशीट आ गई! क्योंकि नरेशजी और मयांक जी को ऐसे काम में टाईम नही मिलता है! लेकिन जिन समाज कंटकों ने दु:शासन के जैसा बर्ताव अपने वॉलंटर्स के साथ किया उनके साथ दो-दो बार घुमने, चार-पाच बार मिटींग लेने, पचास बार फोनपर बाते करने को नरेशजी को बहुत समय मिलता है! जबकी आपको मै, अजय पानीकर, घनशारामाणी जैसे वॉलंटर्स ने मना किया था कि आप माफीया से मत मिला करो, फिर भी २८ मई को रात ११ बजे उनके साथ घुमें! *(शोले में 'वो' ठाकुर देखो और 'ये' ठाकूर तो रामगड के लोगों का साथ देने के बजाय पहले गब्बर सही है या गलत ये वेरिफाय करने उसके साथ रामगड में ही घुमते है, वाह..!) उस रात मुझे अपने कई लोगों के फोन आये की - 'क्या' नितीन ..., तुम माफीया से मार खाने के बाद भी लढ रहे हो और तुम्हारे लोग ऐसा घुमते है! (जो ८५ से जादा लोग १/४/१२ को जुडे थे वे ये सब सुनकर वापस जुडेंगे क्या?)

*iv) जो माफीया हमारे उपर झुठा Extortion केस डलवा सकते है वे लोग तो खुद से रात को चलके आये नरेशजी के उपर (मेरे साथ जोडकर) उसी केस में फँसा सकते थे! या वो औरत जिसके कहनें पर आये थे वो भी 'गलत' इल्जाम डलवा सकती थी! तब तो ये अण्णा का पुरा आंदोलन उसी रात को पुरी तरह बदनाम होता था! (क्योंकी ऐसा करने के लिए कोई भी आराम से २-४ लाख रुपये देता था!) ये कभी सोचा है क्या? (या तो ऐसा भी संदेह है की उन शातिर लोगों ने नरेशजी को छोडा कैसे?)

v) इसी डिलाई के दरम्यान, असिस्टंट कमिश्नर से तडीपार कराने के पहले जो बाँड भरने का प्रोसिजर होता है, उसके लिए हमें (११० के तहत) नोटीस आया था! मैने वो संकट भी नरेशजी को बताया, उसके बाद २०/६/१२ को भांडुप में अण्णा नोटीस बोर्ड के उपर का अण्णा का बॅनर उन माफीया ने फाड डाला! वो भी नरेशजी को बताया! लेकिन उनका एक कॉल भी नही आया!

१०) अब तक तो किसी का भी सहनशक्ती का बांध टुट जाएगा! क्योंकी माफीया से बत्तर तो अपने लोगों की गद्दारी लग रही थी! मेरे यहाँ तो लोग ये भी कहने लगे कि तुम्हारे 'सिनियर' लोगों ने वाकई इन भु-माफीया से 'फंड' लिया होगा, नही तो इतनी बार समझाने के बावजुद भी प्रफुल्लजी का माफीया के फेवर में 'वो' लेटर भिजवाना, माफिया का बार-बार चकाला ऑफीस आना, नरेशजी का २०/४/१२ और २८/५/१२ के रात को 'उनके' साथ घुमना, मयांकजी का हमसे जरा भी बात न करना, 'मर जाये तो भी चलेगा' ऐसे हाल में छोडना, हमारे मसले को दुसरे वॉलंटर्स से छिपाये रखना, ये सब गलती से भी नही होता! इस वजह से मैने १२/६/१२ को फेसबुक में लिखा कि किस तरह हमारे जिम्मेदार वॉलंटर माफीया के साथ घुमते है! अब तक मेरी तरफ ध्यान न देनेवाले नरेशजी इससे तुरंत हरकत में आ गये! मैने उन्हे बोला की - 'आप लोग मेरे विभाग में ही लोगों के सामने मुझे ३-४ बार अपनी दौगली हरकतों से जलिल करते हो, ये मेरी परेशानी का १० प्रतिशन भी नही था। जिससे आपको इतनी तकलीफ हुई...., फेसबुक तो फिर भी जिनका फेस दिखता नही वही चलाते है! मेरा नाम तो आपने मेरे एरिया में इससे १०० गुना खराब किया है!!!'

११) फिर १३/६/१२ को मेरे से मिलना तय किये बिना, नरेशजी, प्रितीजी, विमल झा और नीजाजी ये लोग मुलुंड में सुषमा मौर्य इनके यहाँ

(156)

(भ्रष्टाचार मत करो के स्टिकर्स लगाना, साईन लेना पर भ्रष्टाचार के खिलाफ लढनेवालें वॉलंटर के खिलाफ काम करना ये कब तक चलेगा? ?)

आकर मुझे फोन या SMS करने लगे के आकर हमें मिलिए। (जबकी मैने सुषमा मौर्य इनको वे आने के पहले से ही समझाया कि मै कामपर हूँ, मिल नही सकता, सो उन्हें मना कर दो.... और मै नही मिलुंगा तो यही लोग जानबुझकर मुझे बदनाम करेंगे कि नितिन न मिलकर अपमान करता है! और ऐसा ही हुआँ!)

*उस समय नरेशजी ने मुलुंड के वॉलंटर्स को ये झुठ बोला कि - 'मेरे पास नितीन के खिलाफ कुछ सुबुत है!' मै उन्ही वॉलंटर को बाद में बोला कि अगर जरा भी सच्चाई नरेशजी में है तो 'वो' सबुत उन्हे दिखाने को मजबुर करें! भांडुप में जो भी उन्होने दौगलापन किया उसका जवाब भी उनसे माँगे! लेकीन उन वॉलंटर में ये सब पुँछने का दम कहाँ? अब मै ही उन्हें पुँछता हूँ - नरेशजी, हिम्मत है तो वो सबुत दिखा ही देना!

१२) १ साल से मुलुंड-भांडुप में सबसे पहले मुझे याद करनेवाले (युझ करने वाले) नरेशजी ने फिर २२/६/१२ और ३०/६/१२ को मुझे मिटींग में जान बुझकर कॉल नही किया! क्योंकी अब मुझे भी युज-न-थ्रो करने के लिए उन्हे मेरे साथ काम करने वाले बाकी वॉलंटर्स को झुठ बोलकके भडकाना था! उन 'मुँह बंद रखनेवाले' वॉलंटर को ये बताया कि - 'नितीन ने २४/६/१२ फेसबुक में IAC के खिलाफ लिखा है! (साथियों, वो फेसबुक की लिखावट पढके कोई भी पढा-लिखा समझेगा कि वो लिखावट १२/६/१२ कि ही है और उसे २४/६/१२ को सिर्फ 'फाईल' में ढाला गया था! मुझे खुद को कॉम्प्युटर का नॉलेज नही!) बाद में ये भी कहा की - 'नितीन अब हमारे साथ नही है!' (मेरा काम नानावटी के बंद कमरे में नही बल्कि एरिया में है, इसलिए ऐसी बाते भी IAC के मंत्री अपने 'नीजी' वॉलंटर्स में करने के बजाय जिधर-जिधर मैने चौकसभा, रॅली, अण्णा नोटीस बोर्ड का ओपनिंग करके अण्णा संघटन को बढाने की कोशिश की उधर उतने लोगों में (भांडुप में) सभा लेकर ही करे! ये भी मैने एसएमएस किया था) नरेश जी के बारे में जितना लिखु वो कम है! *इनके दौगलेपन का नतीजा ये की माफीया को टाईम मिला और उनकी हिम्मत बढी और उन्होने एक तरफ तो नरेशजी को मध्यस्थ रखके केस पीछे लेने की बाते की और दुसरी तरफ मेरे चार्जशीट में और दो झुठे गवाह जोड दिए! यही नहीं.. उनका जंगल राज और भी बढ गया! २७/६/१२ को सरवनसिंग नाम के ७० साल के लंगडे बुढे के दो दुकान ताला बदलकर हडप लिए! तथा उनकी बेटी को भी गालीयाँ - धमकीयाँ दी! (सबुत है)

**अब सबसे अहम सवाल ये कि जब नरेशजी को माफीया से उनके इन पापों के बारे में पुँछना नही है, हमारे साथ उनसे लढना ही नही था तो 'उनसे' इतनी मिटींगे और घुमना-फिरना किया क्यों?

*** (ये पत्र समाप्त करने से पहले ही एक ऐसी शर्मनाक खबर सामने आयी जिसे सुनकर मेरा शक और इरादा पक्का हुआ! ११/८/१२ की मिटींग में नरेश जी ने ये कहाँ कि मैने आयएसी के नाम से १५,००० रु. लिए है!! मै चाहता तो, मै पहले म.न.से. का भांडुप में सबसे अग्रेसर मुल कार्यकर्ता था। लेकिन वहाँ पे चापलुसी को बढावा देखकर कढवी तरिकेसे अपने क्षेत्र के विधायक के सामने ये बाते रखकर मै हट गया। जब की भांडुप में आज म.न.से. के तीन नगर सेवक और १ विधायक है। मै चाहता तो चापलुसी करके 'अच्छे' से रह सकता था! इस आंदोलन में भी मै शुरुवात से अपने प्रोफेशन से ध्यान हटाकर दिलसे दिनरात एक करके काम करते आया! आज मै ये सब काम-धंदे का नुकसान, खर्चे ये सब गिनू तो ये पंधरा हजार से कही उपर है! *सबसे अहम बात ये कि मुझे क्या जरुरत है कि - माफियाँ से जान का खतरा लो.. उनसे घुस में ५० हजार से १ लाख तक अडके मिल सकते थे उसे ठुकराओं... नतीजा ये कि झुठे केस की जिल्लत लो.. जानवर जैसा मार भी खाओ और उपर से 'पगार' लेकर काम करनेवाले मंत्री हमारे बजाय 'उन्हे' फेवर करने के लिए उलटा हम पर ही फालतु इल्जाम लगाये! क्या ये इनाम है आयएसी में जी जान से काम करनेका?)

** अब वापस पुछता हु - बताओं और पुरा ब्योंरा दो! और जैसा बोले है वैसा पुलिस कम्प्लेंट करके ही दिखाओं !! (सामने गधे बैठे है ये समझकर बच्चे जैसा भाषण मत करो! ऐसा सिनाजोरी दिग्विजय और मनीष तिवारी जैसे नोकर लोग करते है!)

अब मयांकजी की बात करते है। इनकी महानता के बारे में क्या कहुँ? ऐसा लगता है इनमें पहले से ही 'राजनेता' आ गया है और इनको भी अब सिर्फ चापलुसों की ही जरुरत है! मयांकजी, क्या आपको समझता है कि कोई इंसान किस हालत में 'सुसाईड' करता है? वो हालत यही है जो आपने मेरे लिए जान-बुझकर पैदा किये! आपको पता है क्या-क्या किया है??

१. आपने मेरे इस संगीन मॅटर को न्युज पेपर में आने के बावजूद भी वॉलंटर से छिपाये रखने की पुरी कोशिश की, वो तो मैने ही (२०/४/१२ के बाद) ५/५/१२ को हॉल में खडा होकर हमारी दास्तान बता दी, जिसे सबने सपोर्ट भी किया।

**२. मैने उस वक्त आपको ये भी बोला की, सिर्फ मुंबई में ५ लाख फ्लॅट बिके नही है, फिर भी गरिबों को खदेडकर सिर्फ अमीरों के ही नये टॉवर्स बन रहे है, इसमे सिर्फ भ्रष्टाचारीयों के ही पैसे लगे है, इस मुद्दे पर हम लढें ताकी मुंबई का हर आम आदमी हमसे जुडे तथा भ्रष्टाचार का पैसा ऐसी जगह हजम भी न हो! लेकिन शायद आप खुद एक बिल्डर है सो आपको और आपकी 'पेज थ्री' लॉबी को तबसे मुझसे नफरत हो गई और शायद ये साजिशे तब से तय हुई!

३. आपने तो २०/४/१२ के बाद से मुझे फोन करना ही टाल दिया! आप मुझे बेटा बोलते थे। मेरी जगह अगर आपका बेटा होता तो क्या आप ऐसा ही करते? ये जुलूम बर्दाश्त करते थे क्या? (हम तो नही करते! ये पत्र अपने बेटे को जरुर दिखाना!)

४. मैने ५/५/१२ को हॉल में ये भी जोर-शोर से कहाँ था कि हमें सपोर्ट करे, गृहमंत्री या कमिश्नर के सामने कैसे भी करके बात करे, हमे धरना या

(आंदोलन महंगाई में डुबने वालों के तो किनारे पे बैठे लोग ये आंदोलन अपने मनमानी से कैसे कर सकते है??)

अनशन करने दो.. क्यों की ऐसा वही वक्त पर अगर होता तो पुलिस पर आयएसी का दबाव पडता, लेकीन ऐसा न होने से पुलिस में ये संदेशा गया कि ये आयएसी वाले कुछ नही कर सकते! इसका नतीजा ये हुआ कि मेरे बाद मांजलकर और उनके पुरे फॅमिली (पत्नी, दो बेटे, एक बेटी) इनके उपर वो ही इन्स्पेक्टर बनकर ने झुठा केस रचाया, जिसमे लाख रु. का नुकसान हुआ, थोडे दिन के बाद उनकी बाईक भी जलाई गई! (पेपर कटींग देखें). असि. कमिश्नर ने हमारे उपर तडीपारीपुर्व बॉंड भरने की नोटीस भेजी जिसके लिए भी हमे अलग से दुसरा वकील करके अभी लड रहे है! खुश है ना मयांकजी!!!

कुछ अन्य बातें:-

१. आप पहले नेतागिरी के खिलाफ बात करते थे, फिर आपने खुद जिसे हम 'आझादी की जंग' कहते है ऐसे आंदोलन में खुद का फोटो डलवाना चालू किया! आप खुद बाबा रामदेवजी के ३ जून के आझाद मैदान आंदोलन में नही आये, लेकिन वॉलंटर्स को अपना फोटो वाला बॅनर लेकर वहाँ घुमाया जरुर! (साथ ही IAC MUM के SMS में मयांक जी डालना चालू किया! अब IAC MUM के अन्ना से जादा आप ही भगवान हो शायद!)

२. जब खुद अण्णाजी महाराष्ट्र में दौरा कर रहे थे तभी भी आप सिर्फ ५ जुन को उनकी मुंबई सभा में आये, उधर भी अपनी फोटो वाली रॅली निकालवायी! लेकिन ६ और ७ जून की आखरी सभा में आप गायब रहे, हाँ, पर अपना फोटोवाला रॅली निकलवाना नही भुले!

**३. जब एक आम आदमी बिना निमंत्रण के देश भावना में अण्णा के आंदोलन में खुद को झौक देता है तो फिर आपको अण्णा के इस अहम दौरे का प्रचार करने के लिए, पर्चे बँटवाने के लिए किसके निमंत्रण की जरुरत थी क्या?

**४. जिस JNM के कर्ता-धर्ता वो ही प्रफुल्लजी है जो अब वॉलंटर्स को फैसाके मुँह सुपा रहे है उस JNM के नाम से पुरे महाराष्ट्र आंदोलन का फंड कैसे जमा हो सकता है? जिस अण्णा या अरविंदजी जो देखकर लोग फंड देते है उनके संस्था के नाम पर लोग फंड देना चाहेंगे या नही? (अब कैसे ये लोगों का लुक-आऊट नही!)

५. आपने २२/६/१२ और २३/६/१२ के मिटींग में 'वॉलंटर्स का बहुमत' इस मीठे शब्द का इस्तेमाल करके अपना फोटो इस आंदोलन में चलाने की बात सब पर थोपी! (जबकी ये काम तो आपने ३ जून के पहले से ही चालू किया था!)

आप 'बहुमत' का बात करते हो तो हमारा जवाब ये है कि- क्या जो घर से आकर नानावटी में भाषण सुनते है वो ही वॉलंटर है? कितने लोग चौकसभा, रॅली में आते है क्या वे कुछ भी नही ? क्या आपने उन सबसे जाके पुँछा कि क्या आप मेरी फोटो देखकर आते हो? अगर आप ऐसे बहुमत को मानते हो तो फिर २० प्रतिशत लोगों से चुने हुअे सरकार से भी क्यों लडना है? (और वैसे भी जो इंसान वॉलंटर मर रहा है फिर भी उल्टा जल्दी मरे ऐसा बर्ताव करे ऐसे हाथ उपर करनेवाले इंसान की फोटो देखकर किसी को क्या प्रेरणा मिलेगी? उससे अच्छा है कि एरिया में काम कर रहे सभी वॉलंटर्स का भी फोटो लगा दो!)

६. इसलिए हम लोगों ने ये फैसला लिया कि हम सिर्फ अपने महापुरुष, अण्णा, अरविंदजी इनके फोटो तथा IAC के अलावा BVJ, भारत स्वाभिमान, आर्ट ऑप लिविंग ऐसे जो भी संघटन इस राष्ट्रीय आंदोलन में है उनके 'लोगो' रहे ऐसा सर्वव्यापी संदेशा जानेवाला बॅनर बनाये और प्रचार करे! (आप सभी बॅनर, हँडबिल देख सकते है।) क्यों की हमें यही साबित करना था कि लोग सिर्फ देशभावना से और अण्णा-अरविंदजी के प्रेरणा से जुडते है! उन्होने किसी को आंदोलन का मालिक नही बनाया है! हमने थाने से लेकर घाटकोपर स्टेशन तक अपना प्रचार कार्य, चौकसभा चालू किया जिससे शायद मयांकजी का इगो हर्ट हुआ और उन्होने IACMUM फेसबुक में लिखा कि 'ये' सब IAC का नाम खराब करनेहेतु हो रहा है! *(वाह रे मयांकजी, आपको मरते हुअे वॉलंटर को फोन करने को टाईम नही, लेकिन ये सब करने को टाईम है!) आप मुझे झुठलाते हो! साथियो, गुस्ताखी माफ करना, पर इन्हे मै यही बोलता हूँ कि - मै वही हूँ जिसने १६ ऑगस्ट के आंदोलन में १४ और १५ को प्रिंटींग प्रेस बंद होने के कारण हँडबिल हाथ से लिखकर १००० झेरॉक्स भांडुप में बाँटे थे... बाद में सबसे २००-३०० रुपये जमा करके पुरे भांडुप में १०००० हॅन्डबिल साथियों के साथ बाँटे थे... भैंस को लेकर एम.पी. के घर पर रैली निकाली थी, अपने खुन में दस्तखत करके वहाँ पत्र दिया था... तब आपको मै IAC के खिलाफ नही लगा? ऑगस्ट ११, दिसंबर ११ में कई चौकसभा हुई... (मुलुंड-भांडुप के सारे चौकसभा के कुल ७-८ हजार सपोर्टर के नाम हमने सौंपे थे) आपने मेरा लिखा हुआ ५०००० पॅम्पलेट दिसंबर ११ में ऑफिशिअली छपवायें, तब मै IAC के खिलाफ नही था! मैने बाकी साथियों की मदद से सितंबर ११ से ही मुलुंड-भांडुप के वॉलंटर्स की विकली मिटींग आयोजित करना चालू किया ताकि ईशान्य मुंबई में IAC का एक अच्छा नेटवर्क बने तभी मै IAC के खिलाफ नही था क्या? ऑगस्ट ११ में कितने नकली लोगों ने अण्णा के फोटो वाले बॅनर पर अपना फोटो चमकाया, नागपुर में एक राजनेताने तो मुझे IAC का सपोर्ट है! ऐसा टि.व्ही पर बोला था, तब तो ये बाते बताने के बावजुद भी आप फेसबुक में कुछ नही लिखें!)

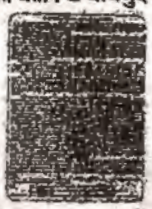

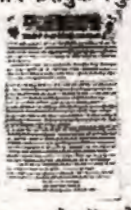

ऑगस्ट ११ तथा दिसंबर ११ के पॅम्पलेट

क्या हमारा ये बॅनर आंदोलन के खिलाफ है?

(158)

(अहिंसक सत्याग्रही बनने का मतलब नपुंसक बनना नही!)

* ये सब बाते मैने जवाब के तौर पर फेसबुक में रखने के बाद और गुमराह लोगों को मुझे मेरे नं. पर फोन करने को लिखने के बाद आपने मेरा IAC MUM फेसबुक से नाम हटवा दिया! क्यो? मेरा सच न लिखने के लिए?

हमारी सोचने लायक निती :-

ये कटुसत्य समझने के बाद अब हम शायद इसकी जड रहे हमारी निती के उपर बात करे.. हम ये आंदोलन 'आझादी की दुसरी लढाई' इस नाम से लढ रहे है! लेकीन ये इतिहास को मद्देनजर न रखते हुअे कैसे हो रहा है इस बारे में मैने अण्णा-अरविंदजी, आप को और मुंबई कॉर्डीनेटर को २/१०/११ को ही एक पत्र (रिपोर्ट) भेजा था। (वो पत्र जोडता हुँ) कई बार मुझ जैसे वॉलंटर्स ने इस तरह की बाते भी रखी कि जनलोकपाल संसद पास करे इसका अल्टिमेट प्रोसिजर क्या है? वो ये कि जब तक सांसद को चुनके देनेवाला गरीब और आम आदमी का वर्ग हमारे तरफ नही आता है (मतलब उनसे नहीं टुटता है!) तब तक चाहे १०० साल आंदोलन हो जनलोकपाल आना मुश्किल है!!

अगर हजारो लोग सिर्फ मेजर-जनरल के कपडे पहनकर सिर्फ नारे देंगे और बाते करेंगे कि - पहले हमारे हाथों में एके-५६ रायफल आने दो, उसके बाद ही हम देश में घुसनेवाले दुश्मन से लढेंगे.. तब तक नहीं! तो ऐसे बातों के लढाकू लोगों को सारा देश ये ही कहेगा कि - तुम लोगों को मौजुदा हथियार से ही सामने लढना नही आता है तो एके-५६ पाकर भी क्या करोंगे? तब तक पुरा देश और हम लोग लुट जायेंगे! इस काल्पनिक उदाहरण का मतलब ये कि अपने क्षेत्र में वाकई भ्रष्टाचार याने क्या अन्याय होता है? कैसे होता है? मौजुदा कानून से भी उससे कैसे लढना है? कैसे शिकायत, RTI, PIL करना है यही अगर आज सारे नीडर वॉलंटर्स को अलग-अलग ॲक्टीविस्ट लोगों से नही सिखाया जायेगा तो वो अपने-अपने क्षेत्र के असह्य भ्रष्टाचार से कैसे लढेंगे और फिर लोग भी वॉलंटर्स के साथ आकर अपने आप सोचेंगे कि - अब इनके साथ वाकई जनलोकपाल की लढाई को भी अपनाना चाहीयें!

हमारे यहॉ (पलटी मारकर) ऐसा बोला जाता है कि हमें बडे-बडे भ्रष्टाचार से ही लढना है, छोटे-छोटे भ्रष्टाचार से नहीं! ऐसा क्यों? आपको तकलीफे नही है इसलिए? भ्रष्टाचार को आप किसमें गिनते हो? पैसे मे या आदमीकी जिंदगी, उसके स्वाभिमान में? आज जिनको जनलोकपाल नही आया तो भी चलेगा ऐसे खुशहाल लोग अपने हिसाब से आंदोलन के आरामदायी नियम बना रहे है!

अण्णाजी, अरविंदजी, अंततः आगे भी बाते होगी ये सोचकर मै इस प्रपंच को यहा रोकता हूँ और आपको समविचारी वॉलंटर्स के तरफ से भी हक से ये जिद करता हूँ कि आप निम्न विनंतीयों को पुरी करे -

१. 'पुरी हकिकत' और 'समांतर हकिकत' पर गौर करे, इसकी पुरी जॉच करे तथा कृती करे....

*२. पुरे हकिकत की राज्य सी.आय. डी. विभाग द्वारा जॉच होने की महाराष्ट्र सरकार से मॉग करे तथा उसमें भी हमारे दिग्गज तथा दिये गए लोगों में से किसका माफीया के 'फेवर' में क्या रोल है इसकी जॉच हो।

३. क्या आप लोगों ने IAC मुंबई के दिग्गजों को अनियंत्रित छुट दे रखी है कि क्या वे आप के नाम से लोगों को को इकठ्ठा करे और उनसे अपने पुराने वॉलंटर की अच्छाई, माफीया से लढते हुअे उसका हुआ हाल इसपर गर्व से बात करने के बजाय तथा उन भ्रष्ट माफीया का निषेध करने के बजाय उन्ही वॉलंटर्स को सरेआम झुठा इल्जाम लगाकर बदनाम करे। इसपर खुलासा हो!

४. IAC मुंबई के दिग्गजों को कई ऐसा घमंड तो नही कि तीन माले का तकरीबन ८-१० करोड रु. का ऑफीस, नानावटी हॉल ये सब सेट-अप हमारे पास है तो सब कुछ हमारे हिसाब से ही हो! अगर ऐसा है तो अण्णाजी ये सब आपके नाम से तथा आम वॉलंटर्स के झंडा लेकर पीछे खडा होने के वजह से मिले हुए सेट-अप का तथा हर चीज का दुरुपयोग आप रोक दें!

५. एक इंसान जो 'तालाब' नही चखा, वो 'बुँद' चाटने का इल्जाम कतई बर्दाश्त नही करेगा! अण्णा-अरविंदजी, जब दिग्गी, मनिष जैसे चापलुसों ने आप पर किचड उछाले थे तब आप से जादा हम लोग बेचैन हुअे थे! वैसे ही मुझ पर भी क्या गुजर रही है वो आप सोंचे और कृती करें।

६. पुरी नीती के उपर विचारमंथन हो!

७. अगस्त ११ के बाद तीन महीनेतक जो भी लोग हमारे मिटींग में आवे, आते थे तब का और आज का पुरा ब्यौरा सामने रखा जाये और ये खुलासा हो कि क्या नये वॉलंटर्स आते रहेंगे ये सोचकर पुराने वॉलंटर्स को ऐसे ही' टिश्यु पेपर' समझकर फेकते रहेंगे तो पुराने वॉलंटर्स क्या करे?

८. इस दौरान जो अर भी सच्चे वॉलंटर्स सामने आयेंगे, उनके साथ क्या हुआ से भी सुनकर उनके साथ भी इंसाफ हो!

और भी कुछ अलिखीत विनंतीयाँ मै आपसे करुंगा ही!

*** ये पत्र मै आप लोगों को इ-मेल और पोस्ट से भेजता हुँ और तीन हप्ते का सादर इंतजार करता हुँ। इसके बाद मै आप के ही दिखाये रास्ते से चलुँगा! विचार मंथन होने हेतु आमरण अनशन करने के अलावा मेरे पास कोई रास्ता नही बचा!

इस दरम्यान जान भी जाये तो पर्वा नही क्योंकि वैसे भी माफीया मुझे अकेला करके जान से मार दे या पुलिस मेरे उपर झुठा केस दुबारा डाल दे ऐसे लावारिस शहीद की मौत मरने से अच्छा है कुछ विचारमंथन कराके मरु!

अण्णाजी, आपको तो देश के लिए भुखा रहने की विधाता की देन है, लेकीन मै आप जैसा महान नही हूँ! कुछ गलती हो तो माफ करना!

nitin03chavan@gmail.com
www.facebook.com/nitin.chavan.965928

हताश पर आशादायी मन से,
नितीन चव्हाण - ९८२०४५१५०५